DR. RANJEET KUMAR

Dept. Of History

H. D. Jain College Ara

M.A , sem.- 2, CC-7, unit-5

बिहार में राष्ट्रीय आंदोलन

1. प्रस्तावना

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन केवल दिल्ली, मुंबई, कोलकाता या लाहौर तक सीमित नहीं था। यह एक व्यापक जनांदोलन था जिसमें देश के हर क्षेत्र ने अपनी भूमिका निभाई। बिहार ने इस आंदोलन में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहाँ के किसान, विद्यार्थी, बुद्धिजीवी, महिलाएँ, मजदूर और साधारण ग्रामीण जनता सभी ने स्वतंत्रता संग्राम को जनआंदोलन का रूप दिया।

बिहार का राष्ट्रीय आंदोलन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक सुधार, आर्थिक न्याय और आत्मसम्मान की लड़ाई भी था।

---

2. 1857 का विद्रोह और बिहार

बिहार में राष्ट्रीय चेतना की शुरुआत **1857** के विद्रोह से मानी जा सकती है। इस आंदोलन का नेतृत्व बिहार में **Veer Kunwar Singh** ने किया।

(क) वीर कुंवर सिंह का योगदान

- वे जगदीशपुर (आरा) के जमींदार थे।
- **80** वर्ष की आयु में भी उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध शस्त्र उठाया।
- उन्होंने दानापुर, आरा, आजमगढ़ आदि क्षेत्रों में अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी।
- गंगा पार करते समय घायल हाथ को काटकर गंगा को अर्पित करने की घटना उनके साहस का प्रतीक है।

1857 का विद्रोह भले ही असफल रहा, लेकिन इसने बिहार में राष्ट्रीय चेतना का बीजारोपण कर दिया।

---

3. उन्नीसवीं सदी के अंत में राजनीतिक जागरण

(क) सामाजिक और शैक्षिक जागरण

- शिक्षा के प्रसार से नई राजनीतिक चेतना का विकास हुआ।
- प्रेस और समाचार पत्रों ने जनमत निर्माण में भूमिका निभाई।
- पटना, मुजफ्फरपुर और भागलपुर जैसे शहर राजनीतिक गतिविधियों के केंद्र बने।

(ख) कांग्रेस का प्रभाव

1885 में **Indian National Congress** की स्थापना के बाद बिहार के नेताओं ने सक्रिय भागीदारी शुरू की।

- प्रारंभिक दौर में बिहार के नेता उदारवादी विचारधारा से प्रभावित थे।
- संविधानिक सुधारों और प्रतिनिधित्व की माँग की गई।

---

4. बंग-भंग **(1905)** और बिहार

1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन ने बिहार में भी राष्ट्रीय भावना को तीव्र किया।

- स्वदेशी आंदोलन का प्रसार हुआ।
- विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया गया।
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान स्थापित किए गए।

बिहार के छात्रों और युवाओं ने स्वदेशी आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

---

5. चंपारण सत्याग्रह **(1917)**

बिहार के राष्ट्रीय आंदोलन का निर्णायक मोड़ **1917** का चंपारण सत्याग्रह था।

(क) पृष्ठभूमि

- नील की खेती के लिए 'तीनकठिया' प्रथा लागू थी।
- किसानों का शोषण हो रहा था।

(ख) नेतृत्व

इस आंदोलन का नेतृत्व **Mahatma Gandhi** ने किया।

- यह गांधीजी का भारत में पहला सत्याग्रह था।
- किसानों की समस्याओं की जाँच के लिए समिति बनी।
- अंततः अंग्रेजों को तीनकठिया प्रथा समाप्त करनी पड़ी।

(ग) स्थानीय नेताओं की भूमिका

- **Rajendra Prasad**
- **Anugrah Narayan Sinha**

- **Brajkishore Prasad**

चंपारण आंदोलन ने बिहार को राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में ला दिया।

---

6. असहयोग आंदोलन (1920–22)

1920 में गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन प्रारंभ हुआ।

बिहार में प्रभाव

- सरकारी स्कूलों और अदालतों का बहिष्कार।
- विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई।
- राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना।

राजेंद्र प्रसाद ने अपनी वकालत छोड़ दी और पूर्णकालिक स्वतंत्रता सेनानी बन गए।

---

7. सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34)

1930 में नमक सत्याग्रह के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ।

बिहार में गतिविधियाँ

- नमक कानून का उल्लंघन।
- कर न देने का आंदोलन।
- धरना और प्रदर्शन।

1934 के भूकंप के दौरान गांधीजी ने बिहार का दौरा किया और राहत कार्यों में भाग लिया।

---

8. 1937 के प्रांतीय चुनाव और कांग्रेस मंत्रालय

1937 के चुनावों में कांग्रेस ने बिहार में बहुमत प्राप्त किया।

- राजेंद्र प्रसाद और अनुग्रह नारायण सिन्हा प्रमुख नेता बने।
- शिक्षा और कृषि सुधारों पर जोर दिया गया।

यह पहला अवसर था जब भारतीय नेताओं को शासन चलाने का अवसर मिला।

---

9. भारत छोड़ो आंदोलन (1942)

1942 में **Mahatma Gandhi** ने ‘करो या मरो’ का नारा दिया।

बिहार में आंदोलन की तीव्रता

- रेलवे लाइनों और टेलीफोन तारों को काटा गया।
- सरकारी भवनों पर कब्जा।
- भूमिगत आंदोलन सक्रिय हुआ।

प्रमुख नेता

- **Jayaprakash Narayan**
- **Ram Manohar Lohia**
- **Yogendra Shukla**

हजारीबाग जेल से नेताओं का पलायन ऐतिहासिक घटना थी।

---

10. किसान और मजदूर आंदोलन

बिहार में किसान आंदोलन भी राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ा था।

(क) किसान सभा

- **Swami Sahajanand Saraswati** के नेतृत्व में किसान सभा का गठन।
- जमींदारी प्रथा के विरुद्ध आंदोलन।
- लगान में कमी की माँग।

किसान आंदोलनों ने राष्ट्रीय आंदोलन को ग्रामीण आधार दिया।

---

11. महिलाओं की भूमिका

बिहार की महिलाओं ने भी स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया।

- विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार।
- धरना और प्रदर्शन।
- जेल यात्राएँ।

महिलाओं की भागीदारी ने आंदोलन को व्यापक सामाजिक स्वरूप दिया।

---

12. छात्रों और युवाओं की भूमिका

पटना विश्वविद्यालय और अन्य शिक्षण संस्थान आंदोलन के केंद्र बने।

- छात्र संगठनों का गठन।
- जुलूस और हड़तालें।

युवा शक्ति ने आंदोलन को नई ऊर्जा दी।

---

13. स्वतंत्रता और बिहार

15 अगस्त **1947** को भारत स्वतंत्र हुआ।

- बिहार के नेताओं ने स्वतंत्र भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने।

---

14. निष्कर्ष

बिहार का राष्ट्रीय आंदोलन बहुआयामी था। यह केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया भी थी।

- **1857** के विद्रोह से लेकर **1942** के भारत छोड़ो आंदोलन तक बिहार निरंतर सक्रिय रहा।
- किसान, मजदूर, विद्यार्थी और महिलाएँ सभी इस संघर्ष का हिस्सा बने।
- चंपारण सत्याग्रह ने बिहार को राष्ट्रीय आंदोलन का अग्रदूत बना दिया।

यदि हम बिहार के राष्ट्रीय आंदोलन का अध्ययन करते हैं, तो स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता केवल कुछ नेताओं के प्रयास से नहीं, बल्कि जनसामान्य के सामूहिक संघर्ष से प्राप्त हुई।

बिहार की धरती ने वीरता, त्याग और बलिदान की जो परंपरा स्थापित की, वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सदा अमर रहेगी।